B-2
L-25
modern
India

सविनय अवज्ञा आंदोलन के लक्ष्य एवं कार्यक्रम

- असहयोग आंदोलन की तरह ही इस आंदोलन में भी बहिष्कार व रचनात्मक कार्यक्रमों को अपनाया गया। गांधीवादी रणनीति व राष्ट्रीय भावना के प्रसार के कारण तथा समाजवादी विचारों की प्रेरणा से भी अब किसान, श्रमिक, महिलाएं अर्थात् प्रायः सभी वर्ग आंदोलन का हिस्सा बनने को तैयार होते गए। इसीलिए आंदोलन आरंभ होते ही बहुत तेजी से प्रसारित होने लगा।

- पूर्ण स्वराज की मांग के साथ ही गांधीजी ने विभिन्न मांगों को सामने रखा जिसमें केन्द्रीय विषय नमक कानून का उल्लंघन था और साथ ही विभिन्न क्षेत्रों की परिस्थितियों के अनुसार चौकीदारी कर, जंगल कानून आदि

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

मांगों को भी कार्यक्रम में शामिल किया। नमक के चयन का विषय गाँधी को एक कुशल रणनीतिज्ञ के रूप में स्थापित करता है क्योंकि :-

a) इस विषय के चयन से अंग्रेज दुविधा में पड़ गए और उनका आंकलन था कि यह एक महत्वहीन विषय है और गाँधी ने इस विषय को पुनः भूल कर दी है। अतः यह आंदोलन प्रभावी रूप नहीं ले पाएगा।

b) दूसरी तरफ गाँधी की रणनीति यह थी कि यदि इस विषय पर अंग्रेजों ने दमनकारी रवैया अपनाया तो अंग्रेजों का अमानवीय पक्ष सबके सामने आ जाएगा और उनके "श्वेत व्यक्तियों के बोझ" के सिद्धांत का पर्दाफाश हो जाएगा और यदि आंदोलन सफल हो गया तो भारतीयों के मन मस्तिष्क

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

से अंग्रेजों का भय जाता रहेगा जिससे हमारा राष्ट्रीय संघर्ष और मजबूत होगा।

c) नमक के चयन से गाँधी की भारतीयता की समझ भी स्पष्ट होती है क्योंकि भारत में नमक का महत्व केवल स्वाद या आर्थिक पक्ष से जुड़ा हुआ नहीं है, बल्कि हमारे रीति-रिवाज, परम्परा, विश्वास व पारस्परिक संबंधों से जुड़ा है। गाँधी यह बखूबी जानते थे कि नमक उत्पादन से लेकर उपभोग तक प्रायः सभी वर्गों से जुड़ा है। अतः गाँधी ने बड़ी ही कुशलता से नमक के विषय को राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष के साथ एक ही सूत्र में बाँध दिया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- गाँधी ने दाण्डी तक लम्बी यात्रा क्यों की? (12 मार्च - 6 अप्रैल, 1930)

i) चर्चा का विषय

(ii) कानून की अवज्ञा करने से लोगों के मन में अंग्रेजों के प्रति भय समाप्त करने हेतु

(ii) अनेक अनुयायी जुड़ते गए

→ सुभाष चन्द्र बोस के अनुसार, "गाँधी की दांडी यात्रा, नेपोलियन के एल्बा से पेरिस मार्च के समान है।"

सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान हुई विभिन्न यात्राएं एवं संघर्ष

सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान केवल गाँधी के द्वारा ही लम्बी यात्राएं नहीं की गयी बल्कि भारत के विभिन्न क्षेत्रों में इस तरह की यात्राएं की जाती रही जिसमें सी० राजगोपालाचारी के नेतृत्व में त्रिचनापल्ली से वेदारण्यम् तक की और केरल में के० केलप्पन की लम्बी यात्रा अत्यधिक लोकप्रिय रही।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

• इस दौर की सर्वाधिक चर्चित घटना में उत्तर-पश्चिमी सीमांत प्रांत में खान-अब्दुल-गफ्फार खान के नेतृत्व में लाल कुर्ती आंदोलन से जुड़ा था। जब ये सत्याग्रही ब्रिटिश कानूनों की अवहेलना करते हुए आगे बढ़ रहे थे तो गढ़वाल रेजीमेंट के सैनिकों ने चन्द्रसिंह गढ़वाली के नेतृत्व में सरकार के गोली चलाने के आदेश को मानने से इंकार कर दिया जो इस बात का संकेत था कि अब अवज्ञा की भावना सेना में भी प्रसारित होने लगी है, जिसे हमारे राष्ट्रीय की एक बड़ी उपलब्धि मानी जा सकती है।

• इसी समय उत्तरपूर्व में जादोनांग के नेतृत्व में मणिपुर क्षेत्र में भी ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध प्रदर्शन किया जा रहा था और इसकी लोकप्रियता तब और बढ़ी जब

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

नागा युवती गाइदिल्यू ने इसका नेतृत्व संभाला और अंग्रेजों को कड़ी कार्यवाही करनी पड़ी तथा गाइदिल्यू को गिरफ्तार कर लिया गया और आजादी के बाद इनकी रिहाई के बाद पं० नेहरू ने इन्हें 'रानी' की उपाधि दी और पूर्वोत्तर क्षेत्रों के भारत में बने रहने का इन्होंने प्रबल समर्थन किया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन का योगदान/प्रसार

- दांडी मार्च की सफलता ने ब्रिटिश निरंकुशता व उनके शोषणकारी कानूनों के पालन की अनिवार्यता पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया क्योंकि जिस तरह नमक सत्याग्रह में कानून की अवज्ञा की गयी, उससे भारतीयों के मन में अंग्रेजों का

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

भय आता रहा अर्थात् अंग्रेजों ने कई दशकों से भारतीयों के मन में जो डर स्थापित किया था, इस आंदोलन ने उसे मिटाकर स्वतंत्रता की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया।

- इस आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी इस रूप में महत्वपूर्ण बनी कि वे न सिर्फ सत्याग्रही बनकर आंदोलन का हिस्सा बनी, बल्कि महत्वपूर्ण नेतृत्वकर्ता बनकर भी सामने आयी। सरोजिनी नायडू, सरलाबेन मेहता, कमलादेवी चट्टोपाध्याय प्रमुख नेतृत्वकर्ता के रूप में स्वीकारी गयी। सरोजिनी नायडू के नेतृत्व में दारसाना सत्याग्रह की चर्चा पूरे विश्व में हुई, जब विदेशी पत्रकार मिलर ने अंग्रेजों के दमनकारी रवैये का विस्तृत वर्णन किया, तो इसके बाद भारतीयों की माँग अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय होने लगी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Name
KHAN SIR

• छात्रों व नवयुवकों की भागीदारी के साथ ही किसानों की व्यापक भागीदारी ने इस आंदोलन को और प्रभावी बना दिया और अब किसानों के हित राष्ट्रीय संघर्ष के साथ जुड़ गए। लगानबंदी व भूराजस्व में कमी की माँग किसानों को आकर्षित कर रही थी और उन्हें यह समझ आने लगा कि राष्ट्रीय संघर्ष उनका अपना संघर्ष है अर्थात् उनके शोषण से मुक्ति का मार्ग है।

• गाँधी की छवि और उनकी भारतीयता की समझ तथा उनके राजनैतिक - आर्थिक चिंतन में गाँवों और किसानों की प्राथमिक भूमिका ने भी किसानों को गांधीवादी आंदोलन की ओर आकर्षित किया। कुछ विद्वान तो गाँधी के आंदोलनों की सफलता का श्रेय किसानों की सहभागिता को ही देते हैं।

• विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के कारण ब्रिटिश

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

वस्तुओं की माँग में कमी आना स्वाभाविक था, तो साथ ही भूराजस्व व आबकारी राजस्व के रूप में होने वाली आय में भी गिरावट आने से अंग्रेजों को भारी आर्थिक क्षति हुई और इसी दौरान भारतीय पूँजीपति वर्ग को स्वदेशी उद्योगों की स्थापना का अवसर मिला अर्थात् सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान भारत के पूँजीपति वर्ग ने भी सहयोगी भूमिका निभायी।

- सविनय अवज्ञा आंदोलन के बाद हमारी आजादी का लक्ष्य भी व्यापक होने लगा। अब केवल राजनीतिक स्वतंत्रता ही नहीं बल्कि आर्थिक-सामाजिक स्वतंत्रता की बात भी की जाने लगी। इसी संदर्भ में 1931 में काँग्रेस के कराँची अधिवेशन में किसानों और श्रमिकों के हितों से जुड़े प्रस्ताव पारित किए गए।
- इस आंदोलन ने यह भी निश्चित कर

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Trusted Learning Platform
KHAN SIR

दिया कि आजादी के बाद भारत की तस्वीर कैसी होगी और राष्ट्र निर्माण में इसकी क्या भूमिका होगी। वस्तुतः इस आंदोलन ने भारत की बिखरी हुई संभावनाओं व ऊर्जा को एक सूत्र में बांध दिया और सम्पूर्ण भारत में राष्ट्रवादी भावना को प्रसारित कर ब्रिटिश सत्ता के स्थायित्व पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया।

- 2010 में टाइम्स पत्रिका ने दुनिया के सर्वकालिक प्रभावशाली आंदोलनों की सूची जारी की, जिसमें सविनय अवज्ञा आंदोलन को दूसरा स्थान मिला, जो इस आंदोलन की प्रभावशीलता को स्वयं स्पष्ट कर देता है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

विशेष :-

- सविनय अवज्ञा आंदोलन की व्यापकता को देखकर लार्ड इरविन ने गांधी के साथ समझौते की पेशकश की और इसी संदर्भ में 1931 में दिल्ली समझौता किया गया। जिसके तहत गांधी द्वारा

आंदोलन को स्थगित कर द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेना स्वीकारा गया तो अंग्रेजों ने गांधी की ग्यारह सूत्रीय मांगों को आंशिक रूप से स्वीकारा। उदाहरणस्वरूप उन राजनैतिक कैदियों की रिहाई जो हिंसा में शामिल नहीं थे तथा नमक बनाने का सीमित अधिकार भी तटवर्ती क्षेत्र में रहने वाले लोगों को ही दिया गया।

KHAN GLOBAL STUDIES KGS IAS Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में जब गांधीजी को भारतीयों को अपेक्षित अधिकार व रियायतें प्राप्त होते नहीं दिखी तो इसे विश्वासघात मानते हुए गांधीजी ने 1932 में पुनः सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ कर दिया।
- इसी बीच ब्रिटिश प्रधानमंत्री मैकडोनाल्ड ने "कम्युनल अवार्ड" की घोषणा कर दी जिसके तहत दलित वर्ग को पृथक निर्वाचन इकाई बनाने का प्रस्ताव किया गया था,

गाँधी ने इस "फूट डालो राज करो" की नीति को समझते हुए इसके विरोध में यरवदा जेल में भूख हड़ताल कर दी और इसी संदर्भ में डा० अम्बेडकर व गाँधी के बीच 1932 का महत्वपूर्ण पूना समझौता हुआ जिसमें सामान्य निर्वाचन प्रणाली के तहत ही दलितों के लिए अधिक सीटें आरक्षित कर दी गयी। बदलती परिस्थितियों को देखते हुए गाँधी ने अंततः 1934 में इस आंदोलन को वापस ले लिया।

प्रश्नः- गाँधी के आंदोलन वास्तव में ग्रामीण आंदोलन थे? (150शब्द)

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR